

६७ ॥ वानप्राकं कालहातासुगमस्य धिष्णुपाकं स्वामिनिधं गकस्य । कुर्यादिकं गतादिवि  
 र्वां अक्षिपू नैवाज्ञं यां पात्रियं पापिदधुः ॥ ११ ॥ मन्वाद्यासि ३ नि (थो) १२ म (धो) निधि १५ न  
 वि १२ उषु सुचोदिके नि (थो) सस्य (त्येव) निधि स्त्रि १० न व न पश्य च १२ हस्य निवा ४ हाडि  
 १३ सिनत्वमासं न हस ४ कषु यगमद्रा ४ सिन (ग) यावाद्रुतना धया म द न द (ग) हाड  
 माया सिन ॥ ६८ ॥ ०० ति श्री देवज्ञानकसुगे देवई नाम विनने मू हर्लु विक्ता म (धो) १३ हाड  
 हसुके जेधं ए थम ॥ ॥ नागं ह्यं न कवे क्रि धाहं न गहं नूद्रादिनी शानगां म सधं ४  
 पिन प्रां ह गार्थम न वि त्वस्यं शु गम स्वकु मा न ॥ गका या स्वतु मि व न क नि स नि शाना नि वि



(अविधिः) (अविन्दा वस्य पाजं च वक्ष्ये हि च पूषा हि धा॥ १॥ उरुना वयनादि (ध्यातु  
 स्तुः) नव्यं च वक्ष्ये न। ननु हि नवीज (गहं) नान्ना नामादि सिद्धयः॥ २॥ स्वाद्यादित्यं च रगमु  
 क्षि, चंटे वापि च न वत्, तस्मिन् गजादिका नाहा, वागिका गमनादिकं॥ ३॥ पूर्वो वयं या  
 मय, उग्रं कृत्वं कृत्वा, तस्मिन् दाना गिन्ना ध्यानि, विषयानुदिसिद्धाति॥ ४॥ विष्ण  
 दा (ग्रयह सोम्या, मिश्रं साधनं संस्तुतां ननु (शिकार्य मिश्रं च, वषात्सर्मादि सिद्धयः॥ ५॥  
 हस्तान् विष्णुणा हि दितः त्रिपुं तयुं नृत्तुत्वा, तस्मिन् नाना विज्ञान, लुपानित्य कलादि  
 कं॥ ६॥ मृगां त्य विष्णु मित्रं, मृदु मे वृत्तं युत्तुत्वा, मंत्रगानां कीर्ता, मित्र कार्य विदुष  
 यन।

धां॥ १॥ मत्तुडा कीहि हं सोनि, मत्तु दान नृधसंस्तुतां ननु (हितान नवागाय, लुदा १० धुद  
 मादिकं॥ २॥ मत्ताहि मि (ग्रयम) धाम सवत् वद डोषा मादं अह विवयं च वं। मिश्रं न  
 सं मे व क नानि तादिति, अथ विजाना नृध संस्तुतां ननु॥ ३॥ पापू कुवा विव क न पं च  
 कता स वक्ष्ये, दिव्य एवा त न द न स व र्ध वत्तु। कार्यं विविक न नि व लु कुज क्रि न  
 कं लो मे क वादि मित्र (गहृत् गत न द ध्या न॥ ४॥ वक्षु धां न व लु ग क प व लु ४ का  
 म नु (डा ता, म (ध्या वं धं गता न नानु धाद (ध्या) च व म धां ध्या ४४ धे वा स्तु नि त म न न  
 व न न पं कादि लि फ न र, डडां (न न र नां ध्या ४४ रु म स र्वा धा न कृ पा न न ४॥ ५॥



विष्णुयान (थ) दाह नाहु पात्यापितं चयत् निन्दपिं विष्णु वाना दो वसुंधा र्यं जं गुर्वधा  
॥ १२ ॥ नाधामलमदुःखवसेवनश्चिपुता नापादपा नापा (थ) नृपाद नं कुवमदुःखि  
उधवा वासवेशा नाका ग्रं वुपहृषमदुःखिनां विपात्यं वद्री इहा दित्यं द्रां वुपवा सवष  
हि गकां वरु ४ कथा विक्रय ॥ १३ ॥ त (ग्र) गृह व्यापमं वुद्वि संयुत न सां प न ना निजया  
निहवन । निक्का वमी दनं वृज्जं ववा क्वव लो वु पूजानां हि निवशनं न सत् ॥ १४ ॥ हृष  
अं स लुपमदुःखनमल हृद्यं गत् (ग्र) वृकुं दी श्र विदि च दिव स वा पि न सा न व स्वा वुद्वि  
निष्पुद्रूनमलि गृह स हि (थ) नाजन हो रूची कर्मापादि निव वृह लो वु मिश्रान् विष्णु ॥

१५ ॥ वृ यशै विक्रयाननसा विक्रयशै कथापि नापो पूज्याणां निजीवान् अवपिना ४ वयश  
हा ॥ १६ ॥ पूर्वोदी भव भानसापे यमल कन्द दिका (ग्र) गृह ४ वृ ग्याय वृ गृह विना राठ  
नं स लिकय ४ स हि (थ) निक्का हो मय ठा निना च विप न मि व क्वव शिपु ह लो (ग्र) वृ वृ मि  
न वया व न हि ने ४ पाप ४ वृ ह द्या य व ॥ १७ ॥ विपां त्य व सिंद म न वृ लो ना दित्य स नि क  
न दिन पु शर्क स्या द्वा डि क त्यं ल थ हं सि क त्यं क र्या न म द् इ शिपु च न वृ वि द्वा न् ॥ १८ ॥ य  
दू द्वा य ठ नं विपु क्क न च न शिपु क्क व न न य क ल्प क्का य वि द्वा न ठ न वि कु ज म सा ति  
सिंह न ना । न न क्का स हि गं च न क्व व म द् इ शिपु वृ ह सं लो ना ती क्का य वि मं (ग) दि



देवदहनं न युक्तं यदि तं ॥ १७ ॥ मद्रानां पातनं न शुभं वमद्वचनं हस्मिन् हे चान्द्र (म)  
न, यमपूरुषा उवाच न च गुह्यं गुह्यं विल (ग्रहं हे ४ स्यान्ता वस्तु धा मात न स इमे ह  
यदि न कृत्यं च कादित्य पूषा, नात्रिका पर्वषषी पिरुदिन न विजडूष कार्ये के दापि ॥ २०  
॥ सं धार्या ४ कू न कर्म स न न कृपा शासि पू णा विनिक, शुभं सार्धं क्रि मे व्रु क्व वत्  
यु स हि ता दि त्य भु क्ति दे वा स्य त (ग्रहि स्थि ना उवा च वि नि च शु र द ष शु हे ४ क ल (म)  
त्या, हा म न यो न ना द शु र व म दू त य हे र्यो न का दि त्य ० ४ ॥ २ ॥ न्ध म व स पू षा  
ध र्ज ज त ह दी न र्यो मां त्पा हि ध, मं द्रा मं नं वि वि ध्य मे व्रु ज त पा (शृ षा ण् वि वा लं ह व न्ता म

[illegible]







सृष्टौ गुरुं विना न न्या विषयटी मधुपौ सा किं ह मिश्रान् ॥ १५ ॥ या मय नृय विष्णु अवत  
 सार्य पित्रो गहि नृह ॥ ह ग्रीर्ण कर्मि न नो का यठ न स ह नो गुरुं ॥ १६ ॥ मृता डा ह न धी  
 पित्रां मृ गता मय यठ न नो ॥ मृदु पुत्र कृम पुत्रे सिद्धि वी ना हि चान या ॥ १७ ॥ वां स्या  
 दिति कुरु मया वित्त सार्य पित्रां विक्रति ॥ यच न न नो विक विन्दु वान ॥ प्रान नृजा विन १३  
 हिन स्य जे न स्या न स ॥ हीन वि ॥ सव त स्या गह व क नु का ॥ १८ ॥ मृदु क व मि पय  
 न ॥ १९ ॥ गुणी वा स त य ॥ वि ॥ स ह जी व व र्म स ॥ वित्त विद्या ए ग स्य न ॥ २० ॥ स न स  
 मित्र हा ॥ य प ॥ वा स म्या त्रे तित ह नो ॥ पुत्र द ह न नो सो मय वान संधे न मि स्य न ॥ २१ ॥